स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ0 मुकेश कुमार सिंह

सहांयक आर्चाय
डीडीयू गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

सारांश

इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षित युवाओं के विचारों के प्रभाव से अनेक परिवर्तन हुए तथा जिन्होंने उस समाज या देश की नई कहानी लिख दी। आज प्रत्येक राष्ट्र–राज्य अपने को वैश्वीकरण की धारा में सबसे आगे बढने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास की सफलता बहुत कुछ राज्य या राष्ट्र के भविष्य कहे जाने वाले विद्यार्थियों पर निर्भर करती है। आज आवश्यकता है यह पता लगाने कीसमाज का विद्यार्थी परिवर्तन को किस रूप में देखता है? क्या छात्र और छात्राएँ दोनों ही वैश्वीकरण के प्रति समान अभिवृत्ति प्रदर्शित करते है? क्या उनके विचार उनके अध्ययन वर्ग से प्रभावित होते है? क्या अभिवृत्ति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र प्रभावित होती है। क्या इस पर समुदाय एवं जाति का प्रभाव पड़ता है? यदि इन प्रश्नों का उत्तर मिल जाय तो समाज के विकास की दिशा तय की जा सकेगी।

महत्वपूर्ण शब्दावली – वैश्वीकरण ,परास्नातक स्तर,

पृष्ठभूमि

आज संसार भर में वैश्वीकरण का नारा गूंज रहा है। प्रत्येक विकसित विकासशील तथा पिछड़े देश वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया को अपनाकर अपना सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक विकास तीव्रतम गति से करने के लिए तत्पर हैं। भारत में भी विकास के सभी क्षेत्रों में विश्वव्यापीकरण के सतत् प्रयास हुए हैं। किसी भी समाज में उपस्थित लोगों की मनोवृत्ति ही वह कारक है, जो समाज की दशा एवं दिशा तय करती हैं। शिक्षित युवा वर्ग तो किसी भी समाज या देश की रीढ़ हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षित युवाओं के विचारों के प्रभाव से अनेक परिवर्तन हुए तथा जिन्होंने उस समाज या देश की नई कहानी लिख दी। आज प्रत्येक राष्ट्र–राज्य अपने को वैश्वीकरण की धारा में सबसे आगे बहने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास की सफलता बहुत कुछ राज्य या राष्ट्र के भविष्य कहे जाने वाले विद्यार्थियों पर निर्भर करती है। आज आवश्यकता है यह पता लगाने कीसमाज का विद्यार्थी परिवर्तन को किस रूप में देखता है ? क्या छात्र और छात्राएँ दोनों ही वैश्वीकरण के प्रति समान अभिवृत्ति प्रदर्शित करते है ? क्या उनके विचार उनके अध्ययन वर्ग से प्रभावित होते है ? क्या अभिवृत्ति शहरी एवं ग्रामीण

क्षेत्र प्रभावित होती है। क्या इस पर समुदाय एवं जाति का प्रभाव पड़ता है ? यदि इन प्रश्नों का उत्तर मिल जाय तो समाज के विकास की दिशा तय की जा सकेगी, क्योंकि विद्यार्थियों की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन के उपरान्त आवश्कतानुसार शिक्षा द्वारा उसका परिमार्जन किया जाय सकेगा तथा शिक्षा के सहयोग से विचारों, मूल्यों, अभिवृत्तियों को गतिशील बनाकर वैश्वीकरण का मार्ग प्रशस्त करते हुए एक समय सापेक्ष समाज का निर्माण किया जा सकेगा। अतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता अपरिहार्य है।

अध्ययन का उद्देश्य –

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1–स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2– स्नातक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3– स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र तथा कला वर्ग की छात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

4–स्नातक स्तर के विज्ञान छात्राओं तथा कला वर्ग के छात्र का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

आज प्रत्येक राष्ट्र–राज्य अपने को वैश्वीकरण की धारा में सबसे आगे बढने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास की सफलता बहुत कुछ राज्य या राष्ट्र के भविष्य कहे जाने वाले विद्यार्थियों पर निर्भर करती है। आज आवश्यकता है यह पता लगाने की समाज का विद्यार्थी परिवर्तन को किस रूप में देखता है शिक्षित युवा वर्ग तो किसी भी समाज या देश की रीढ़ हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षित युवाओं के विचारों के प्रभाव से अनेक परिवर्तन हुए तथा जिन्होंने उस समाज या देश की नई कहानी लिख दी।

परिकल्पना –

प्रस्तुत अध्ययन में अधोलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है दृ

1. स्नातक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. स्नातक स्तर के विज्ञान तथा कलावर्ग के छात्राओं की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3–स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र तथा कला वर्ग की छात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4– स्नातक स्तर के विज्ञान छात्राओं तथा कला वर्ग के छात्र का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के कला एवं विज्ञान वर्ग के स्नातक स्तर के 50–50 छात्र एवं छात्राओं को चयनित किया गया है।

प्रयुक्तशोध उपकरण– शोधकर्ता ने अध्ययन विधि के निश्चय के पश्चात् समस्याओ के समाधान लिए वैश्वीकरण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया है जिसे डॉ० नन्दूलाल एवं कुमार यादव नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय प्रयागराज के द्वारा तैयार किया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण–सर्वप्रथम परास्नातक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात को तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1

स्नातक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात की तालिका–

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी० एफ०	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
कला वर्ग के छात्र	50	1780	17.6	98	2.04	0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक है।
विज्ञान वर्ग के छात्र	50	184.3	14.5			

उपरोक्त तालिका से यह प्रतीत हो रहा है कि कला वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 178.9 व मानक विचलन 17.6 है एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 184.3 व मानक विचलन 14.5 है। इन दोनों समूहों के बीच क्रान्तिक अनुपात का मान 2.04 है जो कि डी०एफ० 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 पर सारिणी मान (1.97) से अधिक है, अतःपरिगणित क्रान्तिक अनुपात का मान 0.05 स्तर पर सार्थक है।

उपरोक्त तालिका के व्याख्या एवं विश्लेषण से प्राप्त तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना कि स्नातक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है। 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है।

तालिका 2

स्नातक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की तालिका–

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी० एफ०	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
विज्ञान वर्ग की छात्राएँ	50	184.3	21	98	1.00	0.05 स्तर पर अन्तर असार्थक है।
कला वर्ग की छात्राएँ	50	179.9	24.5			

तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग कीछात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 184.3 व मानक विचलन 21 है एवं कला वर्ग की छात्राओं का मध्यमान 179.9 व मानक विचलन 24.5 है। इनका क्रान्तिक अनुपात का मान 1.00 है जो कि डी0एफ0 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 पर सारिणी मान (1.97) से कम है अतः परिगणित क्रान्तिक अनुपात का मान 0.05 स्तर पर असार्थक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, स्नातक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्राओं में वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।ष 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है।

तालिका 3

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी० एफ०	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
विज्ञान वर्ग के छात्र	50	184.3	14.5	98	1.08	0.05 स्तर पर अन्तर असार्थक है।
कला वर्ग की छात्राएँ	50	179.9	24.5			

उपरोक्त तालिका को देखने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 184.3 व मानक विचलन 14.5 है तथा कला वर्ग की छात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 179.9 व मानक विचलन 24.5 है और इन दोनों समूहों के बीच क्रान्तिक अनुपात का मान 1.08 है, जो कि डी०एफ 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 पर सारिणी मान (197) से कम है। अतः सी०आर० का मान 0.05 स्तर पर असार्थक है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना कि स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र तथा कला वर्ग की छात्राओं में वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है़ 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है।

तालिका 4

कला वर्ग के छात्र तथा विज्ञान वर्ग के छात्राओं की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की तालिका–

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी० एफ०	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
कला वर्ग के छात्र	50	178.9	17.6	98	1.39	0.05 स्तर पर अन्तर असार्थक है।
विज्ञान वर्ग की छात्राएँ	50	184.3	21			

तालिका का अध्ययन करने से स्पष्ट हो रहा है कि कला वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 178.9 व मानक विचलन 17.6है, तथा विज्ञान वर्ग के छात्राओं की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 184.3 व मानक विचलन 21 है, तथा इन दोनों समूहों के बीच क्रान्तिक अनुपात का मान 1.39 है जो कि डी0एफ0 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सारिणी मान (1.97) से कमहै। अतः सी०आर० का मान 0.05 स्तर पर असार्थक है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना कि स्नातक स्तर के कला वर्गके छात्र तथा विज्ञान वर्ग के छात्राओं की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।़ 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

1. प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति इसी स्तर के कला वर्ग के छात्रों की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति की तुलना में अधिक है। दोनों अभिवृत्तियाँ के मध्यमानों के मध्य 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक है। अतः वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति छात्रों के वर्ग विभाजन से प्रभावित होती है। जिसका कारण सम्भवतः कला वर्ग के छात्रों में समान गतिशीलता एवं समान सामाजिक सहभागिता का कम होना है।

2. प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्राओं की वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति इसी स्तर के कला वर्ग के छात्राओं की तुलना में अधिक होते

हुए भी एक समान है एवं दोनों ही अभिवृत्तियों के मध्यमानों के मध्य किसी भी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति छात्राओं के वर्ग विभाजन से प्रभावित नहीं होती जिसका कारण दोनों ही वर्ग के छात्राओं के द्वारा शिक्षा के महत्व को समझना है जिसके कारण वे इस सम्बन्ध में समान अभिवृत्ति रखती है।

3. प्रस्तुत शोध से यह परिणाम प्राप्त होता है कि विज्ञान वर्ग के छात्रों का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृत्ति इसी स्तर के कला वर्ग के छात्राओं की अपेक्षाअधिक होते हुए भी एक समान है दोनों समूहों की अभिवृत्तियों के मध्यमानों मध्य किसी भी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि इन दोनों वर्गो के छात्र–छात्राएँ वैश्विक एकता के उन्नयन के प्रति समान अभिवृत्ति रखते है क्योंकि वे इससे समान रूप से जुड़े हुए हैं तथा वैश्वीकरण से समान रूप से प्रभावित है।

4.प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह प्राप्त होता है कि स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग की छात्राओं का वैश्वीकरण के प्रति अभिवृति इसी स्तर के कला वर्ग के छात्रोंकी तुलना में अधिक होते हुए भी एक समान है दोनों समूहों की अभिवृत्तियों के मध्यमानों के मध्य किसी भी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

वैश्विक युग में उच्च शिक्षा में सुधार हेतु शैक्षिक गुणवत्ता पर विशेष बल, शहरी तथा ग्रामीण शिक्षा हेतु संसाधनों में वृद्धि समाज के लोगों के सामाजिक स्थिति का उन्नयन, आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता, जातिगत भावनाओं की उपेक्षा इत्यादि ये सब कारण निश्चित रूप से वैश्वीकरण की अवधारणा को प्रभावित कर रहे हैं। इनमें सकारात्मक सुधार होने की आवश्यकता है जिससे सभी वर्ग, जाति, समुदाय, राष्ट्र के लोग अपने सोच समझ और विचार को संकीर्णता से ऊपर उठाकर सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ सके ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर निश्चित रूप से उनमें राष्ट्रीयकरण, अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध तथा विश्वव्यापीकरण की भावना होगी उनका स्वयं का परिवार का तथा देश के विकास में सकारात्मक भूमिका हो सकेगी। प्रस्तुत शोधकार्य से इन विन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की ओर संकेत मिल रहा है जिससे शिक्षा शैक्षिक गुणवत्ता के साथ–साथ वैश्वीकरण को भी अंगीकार कर सकेगी।

आज की परिस्थितियाँ किसी देश और समाज को संकुचित परिधि से विस्तृत परिधि की ओर जाने के लिए बाध्य कर रही है। वैश्वीकरण शिक्षा के वैश्वीकरण के अभाव में समान गति से समबद्धता एवं विकास करना सम्भव नहीं हो सकेगा। इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करने वाला है इस शोध कार्य के निष्कर्षो से प्रेरणा लेकर शिक्षा जगत एवं शिक्षा व्यवस्था में वैश्वीकरण के सन्दर्भ में आगे बढ़ा जा सकता है। सुधार करकेवैश्वीकरण के सन्दर्भ में आगे बढ़ा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

अग्रवाल, जे०सी० – स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास, आर्य बुक डीपो, दिल्ली, 1908।

आल्टवाक फिलिप जी० – भूण्डलीकरण एवं विश्वविद्यालय आसमान दुनियाके मिथक एवं चार्थ परिय 2004।

कुमार, अजय – धर्म, संस्कृति साम्प्रदायिकता और वैश्वीकरण, उद्भावना प्रकाशन, नई दिल्ली –2002

कपिल, एच०के० – सांख्यिकीय के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), भार्गव प्रकाशन, आगरा 1995 ।

कुरियन, सी०टी० – वैश्विक पूँजीवादी और भारतीय अर्थ– व्यवस्था ।

गुप्ता, एस०पी० – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2010।

गुप्ता, एस०पी० – सांख्यिकीय विधियाँ शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद 2003। जयपुर 2004 ।

झिंगन, एम0एल0 – अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, वृन्दा पब्लिकैशन प्रा०लि०, नई दिल्ली 2004

दूबे, अभय कुमार – वैश्वीकरण के विविध आयाम, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।

पपोला, टी०एस० – ग्लोबलाइजेशन एण्ड सोशल इक्सक्लूशन इवालवींग इन इनक्लूसनरी पालिसी फ्रेमवर्क जेनेवा 2003 ।

पाण्डेय, रवि प्रकाश – वैश्वीकरण एवं समाज, शेखर प्रकाशन इलाहाबाद 2005 ।

पाण्डेय, विमलेश कुमार – वैश्वीकरण के विविध आयाम, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005।

पाण्डेय, वी०पी० – शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान एवंसर्वेक्षण वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।

पणिक्कर, के०एन० – वैश्वीकरण, संस्कृति और साम्प्रदायिकता ।

बेस्ट, जान डब्लू – रिसर्च इन एजूकेशन, प्रेन्ट्रीस हॉल ऑफ इण्डिया न्यू देलही 1977

बुच एम०बी० – सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, बड़ौदा 1974 ।

बुच, एम०बी० – फोर्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वोल्यूम 1, 1983–87 ।

बुच, एम०बी० – फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वोल्यूम 1, 1987–92 ।

बेस्ट, जॉन डब्लू – रिसर्च इन एजूकेशन, पेक्टिस हाल इन कार्पोरेशन, 1972 ।

भारत में सामाजिक परिवर्तन – एन०सी०आर०टी, नई दिल्ली 2003 ।

भगवती, जगदीश – इन डिफेन्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली 2004 ।

राय, पारसनाथ – अनुसंधन परिचय, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा 2004।

राय, शशिकान्त – आधुनिक विश्व एक आयाम नई दिल्ली 1999 ।

रूहेला, सत्पाल – भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1992 ।

शर्मा, रामनाथ – शैक्षिक समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1999।

समाचार पत्र – अभावों से घिरी उच्च शिक्षा सम्पादकीय. दैनिक जागरण, लखनऊ संस्करण, 3 फरवरी 2008 ।

समाचार पत्र – हिन्दी का वैश्विक विस्तार, सम्पादकीय, दैनिक जागरण, लखनऊ संस्करण, 2 अक्टूबर 2008।

समाचार पत्र – समान पाठ्यक्रम की चुनौती सम्पादकीयइदैनिक जागरण, लखनऊ संस्करण,द17 फरवरी 2009 ।

समाचार पत्र – उच्च शिक्षा को मुनाफाखोरी से बचाइये सम्पादकीय, दैनिक जागरण, लखनऊ संस्करण, 4 अगस्त 2009 ।

समाचार पत्र – उच्च शिक्षा को निजीकरण से बचाइये सम्पादकीय, अमर उजाला, इलाहाबाद संस्करण, 18 सितम्बर 2009 ।

समाचार पत्र – सिर्फ कमाई करने आएंगे विदेशी संस्थान सम्पादकीय, दैनिक जागरण, लखनऊ संस्करण, 29 मार्च 2010 ।